अमरुद की खेती

- अमरुद विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं भूमि में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है
- उत्तरी भारत की जलवायु में वर्ष में दो बार इसकी फसल ली जा सकती है

- विटामिन सी का अच्छा स्रोत
- इसमे पेक्टिन पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है
- उत्पत्ति उष्ण कटिबंधीय अमेरिका माना जाता है

प्रजातियाँ

❖ इलाहाबादी सफेदा	❖ सरदार (लखनऊ-49)
❖ सेवनुमा अमरुद	❖ इलाहाबादी सुरखा
❖ बेहट कोकोनट	❖ ललित

भूमि की तैयारी
या
गड्ढो की तैयारी

- खेती लगभग सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है, उपजाऊ दोमट भूमि उत्तम
- जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में 1-2 जुताइयां कल्टीवेटर या रोटावेटर से

- पौधों की रोपाई के लिए, किस्म के अनुसार 5x5 मीटर की दूरी पर, 60x60x60 मीटर पर गहरे गढ्ढे तैयार करते है
- तैयार गड्ढो में बरसात के पूर्व 25-30 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद, 250 ग्राम सुपर फास्फेट तथा 40-50 ग्राम फॉलीडाल धूल मिट्टी में मिलाकर गड्ढो को भरते है

पौध रोपण का समय एवं विधि

- रोपण जुलाई-अगस्त तथा सितम्बर माह में उपयुक्त मानते है
- सिचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर पौधे मार्च में भी लगाये जा सकते है
- जिन क्षेत्रो में बरसात अधिक होती है, वहां रोपण बरसात के अंत में करना चाहिए

- एक वर्ष पुराने सीधे बढ़ने वाले पौधों को, जिनमे कलम का स्थान अच्छी तरह से जुड़ा हो रोपण के लिए चुनाव करना चाहिए
- चुनाव किये गये पौधे रोग रहित होने चाहिए
- पौधों को विश्वसनीय व प्रमाणित पौधशाला से ही लेना चाहिए

- पौध रोपण 5x5 मीटर पर करना चाहिए
- पौध रोपण के लिए तैयार किये गये गड्ढे के बीचो-बीच, पौधे की पिण्डी के बराबर गड्ढा खोदकर पौधे लगाना चाहिए

खाद एवं उर्वरक

आयु (वर्ष)	गोबर की खाद (किलोग्राम)	नत्रजन ग्राम	फास्फोरस ग्राम	पोटाश ग्राम
1	10	50	25	50
2	20	100	50	100
3	30	150	75	150
4	40	200	100	200
5	50	250	125	250
6 और अधिक	60	300	150	300

- उर्वरको को पेड़ के चारो ओर मुख्य तने से 1 से 1.5 मीटर की दूरी पर डालकर मृदा में मिला देना चाहिए
- नत्रजन की मात्रा को दो बार में पहली जून-जुलाई एवं दूसरी नवम्बर में देना चाहिए
- फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा नवम्बर माह में देना अच्छा रहता है

सिचाई

- बड़े पेड़ो की सिचाई दिसम्बर-जनवरी में 20-25 दिन के अंतर पर
- छोटे पौधों में सिचाई शरद ऋतु में 15 दिन के अंतर पर तथा गर्मियों में 7 दिन के अंतर पर
- बड़े पेड़ो की सिचाई कूड़ विधि से करनी चाहिए

खरपतवार नियंत्रण तथा छटाई

- पौधों की प्रारंभिक अवस्था में थालो की निराई- गुड़ाई करनी चाहिए
- पौधे काफी फैलते है, इसलिए इन्हे प्याला विधि से ढांचा देना चाहिए

- तने के निचले भाग में या जड़ो से कल्ले निकलते है जिन्हे आरम्भ में ही काट देना चाहिए
- मार्च के महीने में सड़ी तथा सूखी एवं लटकी शाखाओ को पेड़ से काट छाँट देना चाहिए

फूल आना (बहार) तथा फल लगना

- उत्तरी भारत में वर्ष में दो बार फूल आते है
  - पहला फ़रवरी-मार्च में (अम्बे बहार)
  - दूसरा जून-जुलाई में (मृग बहार)
- फ़रवरी-मार्च के फूल बरसात के मौसम में फल देते है

- जून-जुलाई के फूल नवम्बर-जनवरी तक फल देते है
- जाड़े के फसल की अपेक्षा मानसून के फल में मिठास कम होती है एवं इस समय कीड़ो और बीमारियों का प्रकोप अधिक होता है

- मानसून की फलत को रोकने के लिए अप्रैल-मई में पेड़ो को पानी देना बंद कर देना चाहिए
- जून में आवश्यक खाद तथा पानी देने पर पर्याप्त मात्रा में फूल निकलकर जाड़े की अच्छी फसल देते है

रोग नियंत्रण

- उकठा
- एन्थ्रेक्नोज
- तना कैंकर

उकठा रोग

- सबसे हानिकारक रोग
- शाखाओ तथा टहनियां एक-एक करके अगले भाग से सुखना प्रारम्भ करती है तथा नीचे की तरफ सूखती चली जाती है।

रोकथाम

- पौध रोपण से पूर्व भूमि उपचार करना चाहिए
- जिन पेड़ो में यह रोग लग गया हो, उन्हें बाग से निकल कर जला देना चाहिए
- रोगी पेड़ो को निकालने के बाद गड्ढे की मिट्टी को 60 ग्राम थीरम को 20 लीटर पानी में घोलकर प्रति गड्ढे के हिसाब से उपचारित करना चाहिए

एन्थ्रेक्नोज

- रोग का प्रकोप मुख्यतः फलो पर होता है
- रोग से प्रभावित फल सिकुड़ जाते है और इनका रंग भूरा हो जाता है
- रोगी पेड़ ऊपर से सूखना प्रारम्भ कर देते है

रोकथाम

- रोगग्रस्त फलो व अन्य भागो को काट कर जला देना चाहिए
- 2-3 ग्राम फाइटोलन दवा को एक लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर 4-5 छिड़काव

तना कैंकर

- रोग के लक्षण सर्वप्रथम डालियों के छिलके पर दिखाई देते है, बाद में डालियों की छाल फट जाती है
- प्रभावित भागो के ऊतक मर जाते है
- उग्र अवस्था में पेड़ शीघ्र ही सूख जाते है

रोकथाम

- रोगग्रस्त फलो व अन्य भागो को काट कर जला देना चाहिए
- कटे हुए भागो पर बोर्डो लेप कर देना चाहिए
- छटाई के बाद 2.5 ग्राम ब्लाइटाक्स-50 को एक लीटर में घोलकर 10 दिन के अंतर पर 2-3 छिड़काव

कीट नियंत्रण

- तना बेधक
- छाल भक्षी कैटरपिलर
- फल मक्खी
- स्केल कीट

तना बेधक

- अमरुद का हानिकारक कीट है
- सूंडी मुलायम प्ररोहो के ऊपरी भाग में छेद कर देती है
- प्रभावित तना खोखला हो जाता है

रोकथाम

- कीटो द्वारा बनाये गये छिद्रो में नुकीला तार डालकर घुमाना चाहिए, जिससे कीट छेद के अंदर ही मर जाये
- नुवाक्रान की 0.15% घोल को 5 मिलीलीटर प्रति छिद्र के हिसाब से डालना चाहिए

छाल भक्षी कैटरपिलर

- इल्ली तने की छाल खाती है, और तने में छेद बना देती है
- छाल खाने के बाद इल्ली काला अवशेष छोड़ती है, जो कि प्रभावित हिस्सों पर चिपका रहता है

रोकथाम

- सर्वप्रथम अवशेषों को साफ कर देना चाहिए तथा तने में बने हुये छिद्रो में क्लोरोफॉर्म में रुई डुबोकर भर देना चाहिए, इसके बाद छिद्रो को ऊपर से गीली मिट्टी से बंद कर देना चाहिए
- नुवाक्रान को एक लीटर पानी में घोलकर पेड़ो पर 2-3 छिड़काव 7 दिन के अंतर पर करना चाहिए

फल मक्खी

- मक्खी मुख्यतः बरसात वाले फलों में अंडे देती है, इनसे निकली इल्लियाँ गूदा खाती हैं, परिणाम स्वरुप फल सड़ जाते हैं

रोकथाम

- प्रभावित फलो को तोड़कर तथा गिरे हुए फलों को इकठ्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए
- मैलाथियान 2.0 मिलीलीटर पानी की दर से 2-3 छिड़काव

स्केल कीट

- पत्तियों और मुलायम प्ररोहो का रस चूसता है

रोकथाम

- प्रभावित डालियों तथा प्ररोहो की छटाई
- 1.5 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन 25 ई.सी. एक लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव

तुडाई एवं उपज

- पौध लगाने के दो वर्ष बाद से ही फल लगना प्रारम्भ हो जाता है
- पौधे 4 वर्ष के हो जाये तब उनसे फल लेना चाहिए
- 15-25 वर्ष तक अच्छी उपज प्राप्त होती है

- फल पुष्पन के लगभग 4-5 महीने में पककर तैयार हो जाता है
- जब फल गहरा हरा रंग छोड़कर पीले हरे रंग के हो जाये तो उन्हें तोड़ लेना चाहिए
- फल अधिक पक जाने पर गिरना प्रारम्भ के देते है

- फलो की तुडाई 3-4 दिन के अंतराल पर करनी चाहिए
- एक पूर्ण विकसित पौधे से लगभग 400-600 फल प्राप्त हो जाते है, जिनका वजन 125-150 किलोग्राम होता है